सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मार्च-अप्रैल 2020

सबसे अंधेरी रात के बाद सबसे चमकदार सुबह

"जब सुबेदार ने, जो वहां सामने खड़ा था, इस तरह प्राण त्यागते देखा तो कहा, "निःसन्देह यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था!" कुछ स्त्रियां भी थीं जो दूर से देख रही थीं, उनमें मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, तथा सालोमी थीं। जब वह गलील में था तो ये उसके पीछे- पीछे चलतीं और उसकी सेवा-टहल किया करती थीं; और अन्य बहुत-सी स्त्रियां भी थीं जो उसके साथ यरूशलेम आई थीं। जब सन्ध्या हो गई, तब तैयारी का दिन होने के कारण, अर्थात् सब्त के एक दिन पहले, अरिमतिया का निवासी यूसुफ आया, जो महासभा का एक प्रतिष्ठित सदस्य था। वह स्वयं ही परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने साहस करके पिलातुस के समक्ष जाकर यीशु का शव मांगा। पिलातुस को आश्चर्य हुआ कि उसकी मृत्यु इतने शीघ्र हो गई, और उसने

.....सबसे अंधेरी.. पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

धर्म की सच्ची परीक्षा

एक युवा जर्मन बालक मेरे सामने बैठा है। मैं ने इससे पहले किसी को भी इस तरह आहे भरते नहीं देखा है। परमेश्वर ने उसे अपने पापों का एहसास दिया है, और वह दिल की गहरी पीड़ा में है। उसने रोमियों 1:26 पर मेरा ध्यान आकर्षित किया और कहा, "परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है।" ऐसा लग रहा था कि उसे क्षमा की कोई उम्मीद नहीं। उसकी समलैंगिकता ने उसके दिल में एक गहरा दाग छोड़ दिया है। और आत्मा में एक घाव जिससे कि उसका दिल, दर्द के साथ धड़कता है। वहाँ, उस शिविर में, मैंने उसे आश्वासन दिया कि वह अब भी शांति और क्षमा पा सकता है यदि वह गहरा पश्चाताप करे और अपने पापों को मसीह के सामने स्वीकार करे। और अपना जीवन परमेश्वर के हाथों में सौंप दे। बहुत से ऐसे नौजवान थे, जो इसी तरह पश्चाताप करके, उस खूबसूरत प्राकृतिक शिविर स्थल में, कुछ दिनों की सभाओं के दौरान शांति पाई थी।

शोधन और संस्कृति इन सभी ढोंगों के साथ यह आधुनिक जीवन - इसके बावजूद पुरुषों, महिलाओं तथा युवाओं की ऐसी जीवन धारा का मंथन कर रहा है जिसमें पाप का बहुत गहरा दाग है। ऐसा जीवन जो किसी भी वास्तविक शांति या आराम का आनंद लेने में शायद ही सक्षम हैं। ये वीभत्स लगाव हमारे समय के एक विशिष्ट भाग बने हैं। कोई संदेह नहीं कि ये अंतिम समय के दिनों और पीढ़ी का संकेत है, जिसने परमेश्वर के पवित्र कानूनों को त्याग दिया है। और खुद को बिना किसी संयम के, निर्लज्ज वासनाएं और नैतिक विद्रोह में फेंक दिया है। यह नीच लगाव संक्रामक और घातक हैं। वे आंख के द्वार से आत्मा में प्रवेश करते हैं। और जीवन के विचार-धारा को संक्रमित करते हैं और आत्मा को नष्ट कर देते हैं।

आप जो भी देखते हैं, उससे सावधान रहें। हमारे सड़कों और राजमार्गो के हर सुविधाजनक स्थानों पर खड़ी विशालकाय विज्ञापनों का होर्डिंग्स - उस पर लगी अधनंगी महिलाओं के चित्र जो अपनी नखरों वाली शैतानी नजरों से आप पर मुस्कुराती हैं। अपनी आँखों को उन पर न लगने दें। अगर शैतान को कभी नरक के शिकारी कुत्तों की जरूरत पड़ती है, तो आजकल के सिनेमा-प्रिय पुरुषों और महिलाओं के रूप में, उस नर्क के झुंड को बढ़ाने के लिए, उसके पास जानवर कई संख्या में है।

हम निश्चित रूप से व्यभिचार, अनैतिकता, विवाह में विश्वासघात, समलैंगिकता और हर तरह की अशुद्धता के संदर्भ में, एक संपीर्ण बिंदु तक पहुंच रहे हैं। ये उलटफेर निर्लज्ज वासनायें हमारे कॉलेजों और संस्थानों, हमारे अस्पतालों और हमारे चर्चों में दंगा मचा रहे हैं।

वो उपदेशक और दार्शनिक

नहीं, जिनकी हमें आवश्यकता है। वे हमारे पास गाड़ी भर के हैं-जो नर्क में जाने के लिए तैयार हैं। हमें जो चाहिए वह है - परमेश्वर के, पवित्र स्त्री-पुरुष जो ईसाई जीवन जीते हैं।

नौजवान पुरुषों और महिलाएँ - जब वो मुझे अपने तबाह और बर्बाद जीवन के बारे में बताते है, ओह, उन नौजवानों का कितना दुःख और दिल का दर्द मैंने साथ बांटा है। ओह, उन युवा महिलाओं के आँसू और पीड़ा, जिन्होंने अपना कौमार्य हवाओं में फेंक दिया है। परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप की आशा करते, वे मेरे सामने बैठे देख मैं आहे भरता हूँ। ओह, उन स्त्री-पुरुषों की क्रूरता और पशुता, जिन्होंने अपने दुष्ट तरीकों से मासूम बच्चों को बहकाया है। मसीह के लहू के सिवाय, ऐसे दाग, ऐसे आँसुओं को क्या मिटा सकता है!

पवित्र जीवन धर्म की सच्ची परीक्षा है। एक पश्चाताप करने वाला पापी, मसीह के क्रूस पर न केवल अपने पापों से सफाई पाता है, बल्कि अपने पापों से एक शानदार आज़ादी भी प्राप्त कर सकता है।

परमेश्वर ने एक न्याय दिवस ठहराया है। जीवन के साधारण क्षेत्रों में, मौलवियों, उपदेशकों और स्त्री-पुरुषों दोनों को इस शरीर में किए गए सभी अशुद्ध कर्मों के लिए परमेश्वर को एक लेखा प्रस्तुत करना होगा। ईसाइयत में कोई शार्टकट या अस्थायी उपचार या विकल्प की पेशकश नहीं है। हमारे चर्चों के अनुष्ठान शायद ही शरीर की गंदगी को दूर कर सकते हैं। आत्मा की अशुद्धता को धोना तो बहुत दूर की बात है।

मसीह के पास वह विमोचन की पेशकश है जो आपके दोषी आत्मा की आवश्यकता है। अपने स्वयं के लहू के बहाए जाने से, मसीह ने सभी व्यक्तियों के लिए सच्चे उद्धार को मोल लिया है। जिस में दैनिक जीवन में पवित्रता शामिल है और अहम बात है। अगर आप कोई ईसाई विचारों वाले एक पादरी या धर्मगुरु को देखें, जो सिनेमा में रुचि रखता है, कोई गलती न करें: नग्न महिलाओं की अशुद्ध हरकतों को देखने के लिए अगर वह खुद के लिए एक शाम का टिकट खरीद लेता है, तो सुनिश्चित है कि वह न तो सभी व्यक्तियों के उद्धारकर्ता को जानता है और न ही अशुद्ध जीवन से पुरुषों और महिलाओं को छुड़ाने के पवित्र परचर्य में उसका कोई हिस्सा है।

सावधान रहें। पश्चाताप करें। परमेश्वर का न्याय निकट हैं। एकमात्र उद्धारकर्ता जो आपके लिए मर गया है, उनके सामने अपने पापों को स्वीकार करें । जो लोग एक बार पश्चाताप कर चुके हैं, उन्हें पवित्रता में हर चूक के लिए फिर से पश्चाताप करना चाहिए। तब आप क्षमा, अपने अंधेरे अतीत से मुक्ति और विजयी जीवन जीने की शक्ति प्राप्त करेंगे।

—जोशुआ दानियल।

....सबसे अंधेरी.. पृष्ठ 1 से

सुबेदार को बुलाकर पूछा, “क्या वह मर चुका है?” फिर उसने सुबेदार से इसकी पुष्टि करके यूसुफ को शव दे दिया। तब यूसुफ ने मलमल का कपड़ा मोल लिया और शव को उतारकर उसमें लपेटा, तथा एक क़ब्र में जो चट्टान में खोदी गई थी रख दिया, और क़ब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का कर लगा दिया। मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं कि उसे कहां रखा गया है।
(मरकुस 15: 39-47)”

कुछ लोग ऐसे थे जो यीशु की कब्र पर गए थे। उन्हें यह देखने का सौभाग्य मिला कि यीशु के साथ अंत तक क्या हुआ था। वे मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम तथा सालोमी थे। वे यीशु से प्यार करते थे और उसके प्रति समर्पित थे। मुझे लगता है कि यीशु की माँ को उस समय तक वहाँ से दूर, घर ले जाया गया होगा। अपना बेटा जिसका जन्म स्वर्गदूतों द्वारा घोषित किया गया था, उसका वह अद्भुत बेटा एक अपराधी की मौत मरे, यह देखना उन के लिए बहुत ज्यादा था।

अरिमतियाह का निवासी, यूसुफ ने पिलातुस के पास जाने और यीशु के शव को मांगने का साहसिक निर्णय लिया। वह यीशु के खून से साफ था। वह महासभा के फैसले से सहमत नहीं था। यूसुफ ने जो किया, ऐसा बहुत कम लोग कर सकते थे। पीलातुस यह जानकर हैरान था कि यीशु इतनी जल्दी मर गया है।

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

सुबेदार जो क्रूस पर तैनात था, उसने यीशु के शरीर को अरिमतियाह के यूसुफ को सौंप दिया। यूसुफ ने बढ़िया, सनी मलमल कपड़े का एक लंबा टुकड़ा खरीदा। यह बहुत महंगा रहा होगा।

नीकुदेमुस ने भी शरीर को सड़ने से बचाये रखने के लिए लगभग चालीस किलो का मिला हुआ सुगंध-द्रव्यों को लेकर आया था। वे नहीं जानते थे कि वे किस तरह की महान सेवा अदा कर रहे थे। यह उनके सबसे अंधेरे लमहे थे। जिस सूरज ने उन्हें अब तक रोशनी दी थी, वह अचानक काला पड़ गया है। अपने सबसे अंधेरे पलों में वे यीशु के प्रति अपने कर्तव्य को नहीं भूले है।

विश्वास, ईश्वर को देखने की आदत है। जब अवचेतन मन सभी पापों से मुक्त हो जाता है, तो हम उस स्थान पर पहुंच जाते हैं, जहां हम हमेशा उम्मीद में रहते हैं - यहां तक कि सबसे खराब परिस्थितियों में भी। यह केवल ईसाइयों के लिए संभव है। ओह! हिंदू अंत्येष्टि में उनका शोक से कराहना। यह उनका सबसे काला घंटा था, फिर भी यूसुफ और इन महिलाओं को किसी तरह की उम्मीद थी। शिष्यों के लिए भी यह सबसे काला समय था। वे सभी एक कमरे में एक साथ बैठे थे। उनका सबसे अंधेरा भरा समय आ गया था। उनकी उम्मीदें बिखर गई। यह आश्चर्यजनक है कि उन्होंने कैसे इसका सामना किया और उस स्थिति से उभर आए। जो लोग यीशु को जानते हैं वे अपने जीवन के सबसे अंधेरे घंटों में आशा के साथ खड़े होने की क्षमता पैदा करते हैं। यीशु को जानना, और उनको जीवन के परमेश्वर के रूप में जानना सबसे बड़ी बात है।

मृत्यु पराजित है। वह अंतिम बात जो परमेश्वर इस दुनिया से दूर करने जा रहे है, वह मौत है। यह मत सोचो कि मृत्यु हमेशा यहाँ रहेगी। यीशु के हजार वर्षों के शासन के दौरान, कोई मृत्यु नहीं होगी। मृत्यु और पाप पर विजय प्राप्त की जाती है। एक ईसाई को यह विश्वास करना चाहिए कि उसके जीवन में मृत्यु और पाप पर विजय प्राप्त की जाएगी। स्वर्ग में सिंहासन पर विराजमान यीशु को देखकर और उस सेवा को याद कर, जिसे उसने उनको प्रदान किया था, अरिमतियाह के यूसुफ तब कैसे आनन्दित हुआ होगा। यूसुफ ने जो उन सबसे काले घंटों में, उसकी जो सेवा की है - उनकी तरह आप भी अपने जीवन के अंत में किसी भी चीज़ में आनंद नहीं लेंगे, सिवाय यीशु को प्रदान की गयी सेवा मात्र ही से।

लोगों ने यीशु को रात के खाने पर आमंत्रित किया, जब वह प्रसिद्ध और प्रशंसित था। लेकिन उस समय में जब यीशु को एक अपराधी की तरह मार दिया गया, तो यूसुफ ने उस चोट, खून से लथपथ और मरोड़े शरीर को मूल्यवान समझा। राजाओं तथा महान योद्धाओं को उनके दफन के समय बहुत सम्मान मिलता है। यहाँ यीशु को ऐसी श्रद्धांजलि देने वाला कोई नहीं है। यूसुफ का विश्वास एक अद्भुत विश्वास है। वह पुनरुत्थान जैसी किसी चीज की उम्मीद तो नहीं करता था। अगर लोगों को पता होता कि वह तीसरे दिन उठेंगे और महान गौरव प्राप्त करेंगे, तो कई लोग उसका सम्मान करते। लेकिन यूसुफ ने तब उसे सम्मान दिया जब वह पुनरुत्थान के बारे में नहीं जानता था। कभी-कभी जब आप हर एक नस को खींचकर परमेश्वर की सेवा करते हो, तो यह एक अकृतज्ञ काम की तरह प्रतीत होता है। आपकी पोशाक, आपके कार्य और आपके बारे में सब कुछ को लेकर लोग आपकी आलोचना करते हैं।

योना मछली के पेट में तीन दिन था। योना 2: 2-4: “उसने कहा, “संकट पड़ने पर मैं ने यहोवा को पुकारा, और उसने मुझे उत्तर दिया; मैं ने सहायता के लिए अधोलोक की गहराई से पुकारा, और तू ने मेरी सुन ली। तू ने मुझे गहरे सागर में, समुद्र की तलहटी में डाल दिया; और धाराओं ने मुझे घेर लिया, तेरी सब लहरें और तरंगे मुझ पर वेग से बह गई। तब मैंने कहा, ‘मैं तेरी आखों के सामने से निकाल दिया गया हूं, फिर भी मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर निहारूंगा।’”

7 वां वचन: “जब मैं मूर्छित होने लगा, मैंने यहोवा को स्मरण किया ...।” ऐसा समय आएगा जब हमारी आत्माएं हमारे भीतर मूर्छित हो जाएंगी। अपनी हताश हालत में हमें फिर से परमेश्वर की ओर देखना चाहिए। और कहाँ आशा है? यीशु ने योना के मामले को उनकी मृत्यु के दृष्टांत के रूप में इस्तेमाल किया। यीशु, कब्र में तीन दिन थे। वह सबसे अंधेरी जगह पर था। वह नरक में गया, जहां खोई हुई आत्माएं रहतीं है। लेकिन उसे वहाँ नीचे जकड़े रखने के लिए कुछ भी नहीं था। पिता ने उसे मृतकों में से फिर से जीवित किया।

ईसाई जीवन का रहस्य, सबसे अंधेरे घंटे में जीवन देने वाला सिद्धांत है। जब प्रलोभन आप पर भारी पड़ता है, तो यीशु के नाम का उच्चारण करना न भूलें। अपने जीवन के सबसे बुरे पलों में यीशु के सामने रोओ। जब यूसुफ यीशु की सेवा कर रहा था, तो उसके दिल में शायद ही कुछ आशा थी। मद्रास के इस शहर में, दस साल तक मैं ने बहुत गहरे अंधेरे दिनों के दौरान सेवा की है। किसी भी सफलता का कोई संकेत नहीं था। लेकिन मैंने परमेश्वर की तरफ आस लगाई। अब जैसा कि मैं काम के विकास को देखता हूं, मुझे आश्चर्य होता है।

आपका युवा जीवन साक्षी बनकर खड़ा रहेगा। अपनी जवानी में विजय आपकी होनी चाहिए। आपकी युवावस्था में जीत का आपके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ेगा। मांसेच्छा और अपनी आत्मा पर विजय प्राप्त करें। मसीह का शरीर आपके लिए दफन हो गया था। एक

दिन आप एक शरीर धारण करोगे जिसे पाप छू नहीं सकता। आप स्वर्ग का आनंद लेंगे। वहाँ इब्राहिम होगा, लेकिन यहूदा नहीं रहेगा। अन्धा बरतमाई रहेगा, लेकिन यीशु को परेशान करने वाले फरीसी नहीं होंगे। लाज़र तो होगा लेकिन अमीर आदमी नहीं होगा। यह सबसे अंधेरी रात है। लेकिन यह सबसे उज्ज्वल सुबह का कारण बना।

- एन. दानियल।

बचने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

एक समय होना चाहिए जब जी उठना शुरू हो; जब मृत आत्मा जीवित रहने लगती है [मन फिराना]।

ध्यान में रखना, वह बड़ा जहाज़ था जिसने नूह को बचाया: वह उसकी धार्मिकता नहीं थी जिसने उसको बचाया था।; वह उसकी भावना नहीं थी; वह उसके आँसू नहीं थे; वह उसकी प्रार्थना नहीं थी। वह यह जहाज़ था जिसने उसे बचाया था। अगर उसने अपनी भावनाओं, या प्रार्थनाओं या अपने जीवन को, एक जहाज़ बनाने की कोशिश की होती, तो वह बह जाता: वह बाकी लोगों के साथ डूब गया होता। लेकिन, आप देखते हैं, वह यह जहाज़ था जिसने उसे बचाया था।

मेरे दोस्तों, आज रात ही बुद्धिमान बनो, और लहू के पीछे हो जाओ। खून बहाया गया है। दया-आसन पर अब लहू है; और जब लहू वहाँ है तो आप बच सकते हैं। परमेश्वर अपने बेटे को, आपके अपराधों और पापों के लिए बाध्य ठहरा रहे हैं। वह कहता है, “मैं दया-आसन पर खून देखूँगा।” मेरे दोस्तों, जल्दबाजी करो और आज रात ही अन्दर आ जाओ; क्योंकि घर का मालिक आख़िरकार उठेगा और दरवाजा बंद करेगा। और फिर कोई उम्मीद नहीं होगी।

यदि मसीह हमें कहता है कि हम स्वतंत्र हैं, तो हम स्वतंत्र हैं। मेरे दोस्त, मसीह आज रात को बुला रहे हैं। शैतान के क्षेत्र से जितनी जल्दी हो सके बाहर निकलो। ... आज रात मेरी सलाह ले लो, और अपनी आत्मा की स्वतंत्रता के लिए बचो।

मेरे मित्र, मैं आपसे पूछता हूं कि पश्चाताप क्या है? यह सही है-आमने-सामने! मुझे लगता है कि ये सैनिक उस अभिव्यक्ति को समझते हैं। किसी ने कहा है कि हर कोई परमेश्वर के तरफ अपनी पीठ किए पैदा होता है। और यह मन फिराना उसे सही तरफ का सामना करने, बदल देता है। यदि आप परिवर्तित होना चाहते हैं, और पश्चाताप करना चाहते हैं, तो मैं आपको बताऊंगा कि आपको क्या करना चाहिए। बस शैतान की सेवा से बाहर निकलें, और प्रभु के मार्ग में आजायें। अपने पुराने दोस्तों को छोड़ दें, और खुद को परमेश्वर के लोगों के साथ एकजुट करें।

पश्चाताप एक ट्रेन से निकलकर दूसरे ट्रेन में चढ़ना है। आप गलत ट्रेन में हैं; आप उस व्यापक मार्ग में हैं जो आपको नरक के गड्ढे में ले जाता है। आज रात उससे बाहर निकलो। पीछे मुड़ जाओ! कौन परमेश्वर की ओर अपने पैर करके चलना शुरू करेगा? "अपनी दुष्टता के मार्ग से फिर जाओ, तुम क्यों मरोगे? पुराने नियम में शब्द “फिरना” है। नए नियम में शब्द “पश्चाताप” है। “हे इस्राएल के घराने, अपनी दुष्टता के मार्ग से फिर जाओ, तुम क्यों मरोगे? परमेश्वर नहीं चाहता कि सुनने वालों में से कोई भी मनुष्य नष्ट हो जाए। लेकिन वह चाहता है कि सभी बच जाएं। यदि आप चाहते हो तो अब आप भी बच सकते है।

एक और दृष्टांत है। मेरी इच्छा है कि मेरे पास उस पर मनन करने का समय हो। वह ‘देखना’ उस शब्द के बारे में है। जंगल में वह सांप है। “और जैसा कि मूसा ने जंगल में सांप को ऊँचा उठाया, उसी प्रकार अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचा उठाया जाए, कि जो कोई विश्वास करे वह उसमें अनन्त जीवन पाए।” इधर देखो! बस कुछ मिनटों के लिए मुझे अपना ध्यान दो। “प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो।” किसी मनुष्य को विश्वास करने में कितना समय लगता है? या, यदि आप करेंगे, तो एक आदमी को देखने में कितना समय लगता है? कुछ लोग कहते हैं कि वे लोगों को ईसाई होने के लिए शिक्षित करने में विश्वास करते हैं। आप बच्चों को कितना समय देखने के लिए शिक्षित करते हैं? आपने माँ को यह कहते सुना, “देखो,” और छोटा बच्चा देखने लगता है। एक बच्चे को ‘देखना’ सीखने के लिए तीन महीनों का समय नहीं लगता है। देखो और जियो! कैसे देखना है, यह जानने के लिए आपको कॉलेज जाने की जरूरत नहीं है। यहाँ एक भी ऐसा बच्चा नहीं, जिसे पता ना हो कि कैसे दिखना है। मसीह कहता है, “मेरी ओर देखो; क्योंकि मैं परमेश्वर हूँ, और अन्य कोई नहीं है।”

खम्भे पर लटकाया एक सर्प है। परमेश्वर इस्राएल के बच्चों से कहते हैं, जो विषैले सर्पो के डसने से मर रहे हैं- “देखो, और जीवित रहो!”

अब, कांसे के टुकड़े को देखने में कुछ भी नहीं है जो एक सर्प के काटने को ठीक कर सकता है। यह परमेश्वर ही है जो उसे ठीक करता है, और ‘देखना’ यहाँ शर्त है। यह आज्ञाकारिता है; और यहीं परमेश्वर चाहते है।

एक पल वह गरीब डसा पीड़ित मर रहा है; अगले क्षण उसकी नसों में जीवन का एक रोमांच दौड़ता है, और वह जीवित रहता है: वह अच्छी तरह से है। मेरे दोस्त, मसीह को देखो,

सत्य की परख!

“वह स्वयं [मसीह यीशु] हमारा मेल है”
(इफिसियों 2:14)

अपने आप को नहीं। वे मसीह को देखने के बजाय सर्प के काटने का घाव को देख रहे हैं। कई पापियों के साथ मामला यहीं है। यही कारण है। घाव की तरफ नहीं देखना है; उपचार की तरफ देखना है। मसीह पाप का उपाय है। आपको घाव को छोड़, उपाय की ओर अपनी दृष्टि लगाना चाहिए - यीशु मसीह जो हमारे विश्वास के कर्ता और सिध्द करने वाला है। आज रात कौन देखेगा, और जीएगा? अपनी आंखें को कलवारी की ओर मोड़ें; प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करें और बच जाएं।

- लंदन में डी. एल. मूडी के अंतिम उपदेश से संबंधित लेख।

लंगड़ा हुआंग

15 अप्रैल, 1981 को जियांगशान काउंटी में निंगबो शहर के पास की बात है। हुआंग डिटैंग नाम के एक बुजुर्ग को कब्र में दफना दिया गया था। हुआंग कभी भी एक आस्थावान पादरी नहीं थे। लेकिन एक अशिक्षित किसान होते हुए, उन्होंने अपने विश्वास को बनाए रखा था। आसपास के समुदायों में हुआंग के लिए बहुत सम्मान था। उनके अंतिम संस्कार में 400 से भी अधिक लोगों ने उनको अंतिम सम्मान देने आये थे, भले ही इसका विज्ञापन नहीं दिया गया था।

जब वह अपने चालीसवें वर्ष में था, हुआंग ने पहली बार सुसमाचार पर विश्वास किया था। वर्षों बाद, अपने पैरों पर दर्दनाक फोड़े आने के कारण, उन्हें बहुत पीड़ा हुई और वे कुछ भी काम नहीं कर पाते थे। स्थानीय लोगों ने उन्हें उपनाम दिया, 'लंगडा हुआंग।'

हताशा होकर, हुआंग ने उपचार के लिए यीशु को पुकारा। थोड़े समय बाद उन्हें एक ज्वलंत स्वप्न आया था, जिसमें प्रभु ने उनसे कहा: "तुम्हें सचमुच मुझ पर विश्वास करना होगा, और मैं तुम्हें चंगा करूंगा। फिर तुम्हें मेरे लिए साक्षी बनना होगा।"

अपने सपने में, हुआंग ने यीशु को उससे मिली सहायता के लिए धन्यवाद दिया। और वादा किया कि एक बार जब वह फिर से चल सकेगा तो वह व्यापक रूप से सुसमाचार का प्रचार करेगा। हुआंग ने कहा कि प्रभु ने उससे कहा: "सिर्फ एक वचन पर्याप्त नहीं है। आपको एक इंडेंटचर का अनुबंध भी लिखना होगा जिसके द्वारा आप अपने आपको, मेरा सेवक के रूप में पेश करने का वादा करोगे।"

हुआंग के पास केवल एक प्राथमिक स्कूली शिक्षा थी। और वह यह नहीं जानता था कि इंडेंटचर का अनुबंध क्या है या उसको कैसे लिखना है। उन्होंने फिर से परमेश्वर की दया और मदद के लिए रोया। फिर उसे एक और सपना आया, जिसमें प्रभु ने उसे अनुबंध को कैसे लिखा जाए, यह दिखाया। हुआंग ने निम्नलिखित दस्तावेज की रचना की:

"मैं, हुआंग डिटैंग, इस इंडेंटचर पर हस्ताक्षर करता हूँ, जिसके द्वारा मैं खुद को हमेशा के लिए सौंप रहा हूं।

मेरी अपनी व्यर्थता के कारण ही मेरे पैरों में फोड़े आये हैं। वे बहुत दर्दनाक हैं। मगर मदद के लिए मुझे और कहीं नहीं मुड़ना है। मैं केवल अपने दयालु उद्धारकर्ता से माँग सकता हूं। सिर्फ मेरे प्रभु यीशु से माँग सकता हूँ कि मैं जो एक महान पापी हूँ, वे मेरे प्रति दयालु हो।

अब मुझे फिरौती की कीमत के रूप में, प्रभु का अनमोल लहू मिला है, जिसने मुझे मृत्यु में से जीवन तक छुड़ाया है। और मुझे पता है कि प्रभु मेरे पैरों को चंगा करेंगे। मेरी आत्मा को हमेशा के लिए स्वर्ग ले जायेंगे। सम्मान और गौरव के साथ मैं परमेश्वर का बच्चा बन जाऊंगा।

मेरे पास परमेश्वर की कृपा के बदले, चुकाने के लिए कुछ भी नहीं है। मैं इसलिए सबसे अधिक खुशी से अपने शरीर और आत्मा को उसे समर्पित करता हूँ। मेरे समर्पण के बाद, मैं पूरी तरह से प्रभु के आधीन में रहूंगा। मुझे कहां भेजा जाएगा, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, और मैं खुशी से जाऊंगा।

चाहे वह पूर्व, दक्षिण, पश्चिम या उत्तर में हो, चाहे वह पहाड़ों पर चढ़ना हो या समुद्र को पार कर जाना हो, चाहे ठंडा हो या गर्म हो, मुझे आगे बढ़ना है। चाहे मैं भूखा या प्यासा हूं, या यदि मैं उत्पीड़न सहूं, फिर भी मैं अंत तक प्रभु का पीछा करूंगा और निराश न होऊंगा। मेरे परिवार में या रिश्तेदारों और दोस्तों में से कोई भी, किसी प्रकार का बाधा डाल मुझे रोकने में सक्षम नहीं होगा। अपने वादे से मुकर जाने के लिए कोई भी मुझे मजबूर नहीं कर पाएगा।

यह संकेत दोनों पक्षों की सामान्य इच्छा है, और दोनों में से कोई भी एतराज़ नहीं करेगा। मैं इसे अपनी इच्छा के प्रमाण के रूप में हस्ताक्षरित करता हूं।

हुआंग डिटैंग। "

परमेश्वर के साथ अपने यह अनूठे अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के कुछ समय बाद, हुआंग के पैरों में फोड़े गायब हो गए। वह फिर से स्वतंत्र रूप से चलने में सक्षम हो गया।

आने वाले वर्षों में, हुआंग का अनूठा अनुबंध के प्रत्येक विषय का परीक्षण किया गया था। क्योंकि परमेश्वर ने हुआंग को अपने ही शब्दों का जिम्मेवार ठहराया और उसे खतरनाक कारनामों पर भेजकर उसका विश्वास बढ़ाया। जिसके परिणामस्वरूप हजारों लोगों ने सुसमाचार को सुना था। 1950 से लेकर 1970 के दशक तक वह कम्युनिस्ट उत्पीड़न के सबसे काले दिनों के दौरान प्रचारक रहे। और कई मौकों पर अधिकारियों द्वारा उन्हें गिरफ्तार और प्रताड़ित किया गया।

हुआंग की सेविकाई की विशेषता यह थी कि परमेश्वर उन चीजों को करने के लिए उनको प्रेरित करते थे, जो कोई तर्कसंगत अर्थ नहीं रखते थे। और कई ऐसे उदाहरण थे। लेकिन मन में अपने अनुबंध को लेकर आक्रोश के साथ, हुआंग ने पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन किया। हुआंग अपनी प्रतिज्ञा के प्रति सच रहा, तब भी जब यह एक महान व्यक्तिगत कष्ट का कारण बना।

एक अवसर पर जब हुआंग उपदेश दे रहा था तो उसने परमेश्वर के आत्मा की आंतरिक आवाज यह कहते सुना, "अंतिम पंक्ति में एक व्यक्ति से प्यार करो!"

उस रात वह सो नहीं पाया था। सुबह वह पादरी से मिला और पूछताछ की कि वह व्यक्ति कौन है जो चर्च की अंतिम पंक्ति में बैठा था। हुआंग को एक छोटी सी झोंपड़ी में ले जाया गया। वहाँ कमरे में चारों तरफ गंदगी फैली हुई है। केवल एक कटे-फटे कंबल ओड़कर बिस्तर पर पड़ा हुआ और पीड़ित एक व्यक्ति को वहाँ देखा था। उस आदमी के अंग पीले थे। और हुआंग ने जब प्रकाश में उस आदमी को देखा था, तो पता चला कि वह एक कोढ़ी है।

भाई हुआंग ने उस व्यक्ति से पूछा कि वह कितने वर्षों से यीशु पर विश्वास कर रहा था। लेकिन उसने अपना सिर हिलाकर संकेत दिया कि वह ईसाई नहीं है। उसने कोढ़ी से पूछा कि वह पिछली रात को चर्च सेवा में क्यों गया था। फिर उसने जवाब दिया कि उसे एक सपना आया है जिसमें उसे सभा में जाने का निर्देश मिला, क्योंकि यीशु उसे बचाना चाहते थे। सभा के उस दिन, कई महीनों बाद, पहली बार वह बिस्तर से उठकर बाहर निकलने में सक्षम हुआ था, और एक पड़ोसी ने उसे चर्च जाने में मदद की है।

हुआंग डिटैंग को नहीं पता था कि उस आदमी की विकट स्थिति में वह कैसे मदद कर सकता है, क्योंकि वह खुद बेबसी में है। तब प्रभु ने उससे कहा, “अपनी जैकेट उतारो और उसे दे दो।” हुआंग डर गया था। उनकी गद्देदार जैकेट ही अपनी एकमात्र वस्तु थी। सर्दियों में पहाड़ों से गुजरते हुए इसने उसे गर्म रखा, और अपनी प्रचार यात्राओं के दौरान वह इसमें सोया करता था। “निश्चित रूप से नहीं, परमेश्वर। मुझे इसकी बहुत आवश्यकता है,” हुआंग ने तर्क किया।

पवित्र आत्मा ने उससे कहा: “यदि तुम उसे नहीं देते, तो तुम जो प्रचार करते हो, वह शोरगुल या झांझ की तरह है। यदि तुम्हारे पास प्यार नहीं है, तो इसका क्या उपयोग है? यदि तुम्हारे पास प्यार नहीं है, तो तुम मेरी सेवा नहीं कर रहे हो।”

हुआंग को आंसुओं के साथ आज्ञा पालन करना पड़ा। लेकिन जैसे ही उसने अपनी जैकेट को दे दिया, उसने बहुत राहत महसूस की। वह कई वर्षों तक जैकेट के बिना था और अभी तक एक बार भी वह शीतदंश से पीड़ित नहीं हुआ।

कभी-कभी परमेश्वर ने जिन मांगों को लेकर हुआंग को परखा, वे अन्य ईसाइयों के लिए सामना करना बहुत मुश्किल था। और उन्होंने इसमें शामिल होने से इनकार करते थे। उदाहरण के लिए प्रभु ने एक दफा, एक अव्यवस्थित वेश्या जो सिफलिस से मृत्यु के निकट थी, उसके साथ सुसमाचार बाँटने और उसके प्रति परमेश्वर के प्रेम का प्रदर्शन करने का निर्देश दिया। हुआंग ने सुसमाचार बाँटा और उसे भोजन और वस्त्र प्रदान किए। हालाँकि, स्थानीय चर्च में रहने वाली महिलाएं, इस तरह की एक मनहूस औरत को मदद करने के लिए, अपने आपको इस कम हद तक गिराना नहीं चाहती थीं। लेकिन हुआंग द्वारा प्रदर्शित परमेश्वर का प्रेम के कारण, वह स्त्री यीशु की अनुयायी बनी, और थोड़े समय बाद उसकी मृत्यु हो गई।

हुआंग ने 1981 में, 96 वर्ष की आयु में, मृत्यु पर्यन्त अपने प्रभु के लिए गवाह रहा। झेजियांग में अपनी निजी क्षेत्र के बाहर, शायद कुछ ही लोगों ने कभी 'लंगड़े हुआंग' के बारे में सुना हो। लेकिन स्वर्ग में उन्हें उस आदमी के रूप में जाना जाता है जिसने परमेश्वर के साथ अपना अनुबंध निभाया है।

-पॉल हैटवे का अंश ‘झेजियांग: द जेरूसलम ऑफ चाइना’ से संकलित।

मुक्तिदाता – यीशु मसीह
प्राश्चितबलि की भविष्यवाणी

(यशायाह 53 अध्याय - बाईबल)

1 जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ*? (यूह. 12:38, रोमि 10:16)

2 क्योंकि वह उसके सामने अंकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। (मत्ती 2:23)

3 वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुःखी पुरुष था, रोग से उसकी जान-पहचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हमने उसका मूल्य न जाना। (मर. 9:12)

4 निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। (मत्ती 8:17, 1 पत 2:24)

5 परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। (रोम. 4:25, 1 पत. 2:24)

6 हम तो सबके सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। (प्रेरि. 10:43, 1 पत. 2:25)

7 वह सताया गया, तो भी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला। (यूह. 1:29, मत्ती 27:12,14, मर. 15:4,5, 1 कुरि. 5:7, पत. 2:23, प्रका. 5:6,12)

8 अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवितों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। (प्रेरि. 8:32,33)

9 उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुँह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।